5.3.7 धर्म परिवर्तन संबंधी विचार

5.4 आर्थिक विचार

5.4.1 अर्थ संबंधी विचार

5.4.2 मिल मजदूरों संबंधी विचार

5.4.3 खेती मजदूरों संबंधी विचार

5.5 शैक्षिक विचार

5.5.1 दलितों को शिक्षाधिकार मिलने संबंधी विचार

5.5.2 नारी शिक्षा संबंधी विचार

5.5.3 शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन संबंधी विचार

5.5.4 शिक्षा मुक्ति का मार्ग है

समन्वित निष्कर्ष

उपसंहार 123 से 130

परिशिष्ट 131 से 146

संदर्भ ग्रंथ सूची 147 से 150

प्रथम अध्याय

रामदास निमेश का व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

प्रथम अध्याय
"रामदास निमेश का व्यक्तित्व और कृतित्व"

प्रस्तावना :

किसी भी साहित्यकार या कवि के व्यक्तित्व को जानना यह महत्वपूर्ण बात होती है। साहित्यकार की रचना में उसके निजी जीवन में आए अनुभवों और विचारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व के निर्माण में समसामायिक परिस्थितियों का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। साहित्यकार का जीवन उसके साहित्य के माध्यम से व्यक्त होता है। उसके जीवन पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक परिवेश का गहरा प्रभाव होता है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न महाकवि रामदास निमेश जी के साहित्य को समझने के लिए उनके व्यक्तित्त्व को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। अत: रामदास निमेश जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन विश्लेषण यहाँ पर प्रस्तुत है।

1.1 व्यक्तित्व :

महाकवि निमेश जी के साहित्य को समझने के लिए उनके व्यक्तित्व की जानकारी को प्राप्त करना अनिवार्य है। अत: हम निमेश जी के जन्म, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, प्रेरणास्त्रोत तथा उनके द्वारा लिखित साहित्य के वारे में प्राप्त जानकारी का लेखा-जोखा यहाँ पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

1.1.1 जन्मतिथि :

महान साहित्यकारों के जन्मतिथि के वारे में एकमत का अभाव होता है। इसके लिए रामदास निमेश जी अपवाद नहीं है। इन्होंने अपनी जन्मतिथि के वारे में स्वयं लिखा है कि, "मेरा जन्म अक्तूवर-नवम्बर, सन् **1935** ई. में हुआ। मुझे तिथि नहीं मालूम। वैसे विद्यालय में प्रवेश के समय अध्यापक महोदय ने मेरी जन्म तिथि **2** जुलाई, सन् **1934** ई. लिख दी। वही सरकारी कागजातों में मान्य है।"[1]

---

[1]. परिशिष्ट से उद्धृत

1.1.2 जन्मस्थान :

महाकवि रामदास निमेश जी का जन्म "गाँव वीरनगर, डाकखाना; थाना एवं विकास खंड अवागढ़, तहसील जेलसर, जिला एटा (उत्तर प्रदेश)"[1] के एक सामान्य मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में हुआ है।

1.1.3 परिवार :

रामदास निमेश जी का परिवार संयुक्त परिवार है। उनके दादाजी का नाम बलदेव सिंह जी था। वह शिक्षित व्यक्ति थे। वे भवन निर्माण करनेवाले एक ठेकेदार थे। जमीन खरीदने के बाद वे किसान बन गये। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती शीतल था। वह अपने नाम की तरह स्वभाव में शीतल थी। वह उदार और धर्मपरायण महिला थी। इन्हें करनपाल और खूबचंद नामक दो पुत्र थे। इनमें से करनपाल जी महाकवि निमेश जी के पिता जी है। उनकी माता का नाम चंपादेवी है।महाकवि निमेश जी को कुल मिलाकर सात भाई -बहनें है। इनके भाईयों के नाम गेंदालाल, बालकृष्ण, लक्ष्मणसिंह और वीरेंद्र कुमार है और बहन के नाम रामादेवी, नौमादेवी और विमलेश कुमारी है। श्रीमती रामलली और ब्रह्मादेवी निमेश जी की चचेरी बहनें हैं।

1.1.4 माता :

महाकवि निमेश जी के माता का नाम चंपादेवी है। उसने अपने नाम की तरह अपने परिवार को प्रेम, स्नेह से सुगंधित वनाया था। वह "जिला मैनपुरी, तहसील जसराना, गाँव कुम्हरौआ निवासी श्री रामलाल"[2] की पुत्री थी। वह सुंदर, सुशील तथा विनम्र थी।

1.1.5 पिता :

रामदास निमेश जी के पिता का नाम करनपाल सिंह था। उनकी शिक्षा लोअर प्रायमरी तक हुई थी। वह भवन निर्माण कला में कुशल मिस्त्री थे। वे एक अच्छे मेहनती किसान, अनुशासन प्रिय और धर्मपरायण व्यक्ति थे। उनके गुरू आर्य समाजी थे। उनका नाम

---

[1]. परिशिष्ट से उद्धृत
[2]. वही

परमानंद जी था।

1.1.6 गुरू :

महाकवि रामदास निमेश जी के गुरू का नाम 'भगवान रजनीश ओशो' है।इनके द्वारा निमेश जी ने सन् **2002** में 'ओशो कम्यून' में दीक्षा ली है। दीक्षा लेने के बाद इन्होंने निमेश जी का आध्यात्मिक नाम 'स्वामी आनंद यातु' रखा है। क्योंकि यह नाम उन्हें अच्छा लगता था।

1.1.7 बचपन :

महाकवि निमेश जी का अधिकतर बचपन उनके ननिहाल कुम्हरौआ में बीता है। वे परिवार में सबसे बड़े होने के कारण परिवार के सभी सदस्यों की ओर से लाड़ प्यार हुआ है। उनके पिता जी पर आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव होने के कारण उनपर भी इस विचारधारा का प्रभाव रहा है। उनकी दादी की इच्छा के अनुसार उन्हें स्कूल में दाखिल कराया गया। दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कॉलेज में अध्ययन की व्यवस्था न होने के कारण अगली शिक्षा से वे वंचित रहे। कवि निमेश जी ने लिखा है कि, "ग्यारहवीं में असफल होकर घर लौट आकर पिता जी के साथ खेती-बाडी संभाली और दि.**4** जून, सन् **1955** ई. को अपने एक मित्र श्री जगन्नाथ प्रसाद को साथ लेकर अपने पैसे से, विना माता-पिता को बताये दिल्ली भाग आया।"[1] प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट होता है की, रामदास निमेश जी का वचपन प्यार-दुलार से बीता है। शिक्षा छूटने के वाद उनको आर्थिक विपन्नता के कारण घर छोड़ना पडा।

1.1.8 शिक्षा :

शैक्षिक जीवन में महाकवि निमेश जी को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ा है। वे अपनी शिक्षा के वारे में लिखते हैं कि, "हमनें हाईस्कूल तक की शिक्षा राजकीय हाईस्कूल, एटा से सरकारी छात्रावास में रहकर प्राप्त की।"[2] निमेश जी ने दसवीं तक की

---

[1]. परिशिष्ट से उद्धृत
[2]. परिशिष्ट से उद्धृत

शिक्षा गणित और विज्ञान विषय लेकर द्‌वितीय श्रेणी में पास की है। इसके वाद अगली शिक्षा लेने के लिए उनके पिताजी ने उन्हें वलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा में प्रवेश दिलाया। लेकिन घरेलू कठिनाइयों के कारण उनकी शिक्षा पूरी नहीं हो सकी। महाकवि निमेश जी को दिल्ली में सरकारी नौकरी मिलने के वाद पंजाव विश्वविद्‌यालय से 'प्रभाकर' (जो.बी.ए. हिंदी ऑनर्स के समकक्ष है) की परीक्षा द्‌वितीय श्रेणी में पास की है। महाकवि ने हिंदी, अंग्रेजी, पंजावी और बंगाली आदि भाषाओं पर प्रभुत्त्व संपादन किया है। उपर्युक्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी का व्यक्तित्त्व शिक्षा प्रेमी रहा है। किसी भी हालत में शिक्षा प्राप्त करना यह उनके जीवन का परम लक्ष्य था। इसलिए उन्होंने फिर पढ़ाई जारी रखी।

1.1.9 नौकरी :

महाकवि रामदास निमेश जी अपनी नौकरी के संदर्भ में लिखते है कि, "मैंने केन्द्रीय सचिवालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में सन् **1955** ई. में क्लर्क के पद पर नियुक्ति पाई। सन् **1965** ई. में जब दिल्ली में खाद्य सामग्री की कमी के कारण राशन व्यवस्था लागू की गई तो डेपूटेशन पर दिल्ली प्रशासन (तत्कालीन) के सिविल सप्लाई विभाग के अपर डिवीजन क्लर्क के पद पर प्रति नियुक्ति पर गया और वहाँ से सन् **1968** ई. में वापिस अपने पैत्रिक मंत्रालय में आ गया। यहाँ पर मुझे अपनी प्रमोशन के लिए संघर्ष करना पड़ा। तव मुझे मेरी वरीयता मिली। सन् **1976** ई. में आई.एस.टी.एम. में एकाउन्टेंसी में मुझे प्रशिक्षण हेतु मन्नोनीत किया गया। जिसे पुरा करने के वाद सन् **1983** ई. में मैंने छह माह वजह सहायक के रूप में काम किया। उसके छह माह वाद मुझे केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा अनुभाग पाँच में एकाउन्टेंट के पद पर डेपूटेशन पर नियुक्त किया। सन् **1985** ई. में मैंने संघीय लोक सेवा आयोग की सेक्शन ऑफिसर ग्रेड की परीक्षा दी। जिसे मैंने प्रथम प्रयास में ही पास कर लिया और सन् **1986** ई. में अनुभाग अधिकारी ग्रेड-**2** राजपत्रित पद पर नियुक्त हुआ।"[1] तथा **13** जुलाई, सन् **1992** ई. को सरकारी सेवा से उन्होंने अवकाश

[1]. परिशिष्ट से उद्‌धृत

प्राप्त किया है। आज वर्तमान समय में महाकवि निमेश जी 'सेवास्तंभ' के द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वॉयस् ऑफ द वीक' के अतिरिक्त संपादक है।

1.1.10 विवाह :

महाकवि निमेश जी बाल विवाह प्रथा से नहीं वचे हैं। उनका विवाह "12 वर्ष की उम्र में जिला मैनपुरी, थाना कुरावली के गाँव पनवाह निवासी श्री मंगली प्रसाद की सुपुत्री रामवती देवी के साथ"[1] हिंदू पद्धति में संपन्न हुआ। निमेश जी की पत्नी अनपढ़ होते हुए भी शांत, व्यवहार कुशल और धैर्यवान महिला थी। तथा वह पति एवं परिवार का मान-सम्मान रखनेवाली महिला थी। दि.4 मई, सन् 1984 ई. को उनका देहान्त हो गया।

1.1.11 संतानें :

महाकवि निमेश जी को छह बेटे हैं। वे सभी उच्चशिक्षित एवं उच्चपदस्थ अधिकारी है। इनकी जानकारी निम्नलिखित प्रकार से देखते है।

निमेश जी के छह बेटों में से पहले का नाम श्री. अरूण कुमार निमेश है। इनकी शिक्षा बी.कॉम. तक हुई है। अब वे एस.बी.आई. मुबंई मे चीफ मैनेजर हैं। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती कुसुम है।उनकी शिक्षा एम.ए. तक हुई है और वह आदर्श गृहिणी है। इनको अर्चना नाम की एक बेटी है, जो एम.वी.बी.एस. है। अव वह पी.जी. प्रवेश की तैयारी कर रही है। तथा आशुतोष नामक बेटा है, वह वी.फार्मा. है और एम.बी.ए. प्रवेश की तैयारी कर रहा है। निमेश जी के द्वितीय वेटे का नाम श्री कृष्णा कुमार निमेश है। इनकी पढ़ाई बी.ए. तक हुई है और वे इण्डियन ओवरसीज वैंक में सहायक मैनेजर है। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती राजकुमारी है। वह बारहवीं पास है और एक आदर्श गृहिणी है। इनको अभिषेक, दीपक एवं सौरभ नामक तीन पुत्र है और ये अध्ययन कर रहे हैं।

निमेश जी के तृतीय वेटे का नाम श्री धीरेंद्र कुमार निमेश है। इन्होंने इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा किया है और वे दिल्ली परिवहन निगम प्रेस में फोरमैन है। इनकी पत्नी श्रीमती गीता जी स्नातक है। इनको दो वेटियाँ है। एक का नाम कुमारी श्वेता है, वह

---

[1]. परिशिष्ट से उद्धृत

बी.ए. का अध्ययन कर रही है। और दूसरी का नाम कुमारी सुगंधा है वह नौवीं कक्षा की छात्रा हैं। निमेश जी के चौथे पुत्र का नाम श्री योगेश कुमार निमेश है। वे निजी कारोबार करते हैं। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती लता है। इनको दो बेटियाँ और एक बेटा है। इनके नाम क्रमश: कुमारी हिमानी बी.ए. की छात्रा, कुमारी मनीषा नौवीं की छात्रा और बेटा गौरव एलीवेटर मकैनिक है।

महाकवि निमेश जी के पाँचवे पुत्र का नाम श्री सिद्धार्थ कुमार निमेश है। इनकी शिक्षा बारहवीं तक हुई है और वे सी.पी. डब्ल्यू डी. बिजली विंग में तृतीय श्रेणी के कर्मचारी के रूप में कार्यरत है। इनकी पत्नी आठवीं पास है और इनका नाम श्रीमती विनोद कुमारी है। उनका पुत्र रोहित सातवीं कक्षा में पढ़ रहा है। दूसरे पुत्र का नाम आदित्य है। इनको दो बेटियाँ है। एक का नाम कुमारी प्राची है वह पाँचवी की छात्रा है और दूसरी कुमारी शालू दो साल की है। निमेश जी के छठे बेटे का नाम श्री. मिलिन्द कुमार निमेश है और उनकी शिक्षा दसवीं तक हुई हैं। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती बाला है और इनकी शिक्षा आठवीं तक हुई है। इनको दो बेटियाँ रूचिका और ऋतिका है और तरूण नामक आठ साल का बेटा है।

1.1.12 प्रेरणास्त्रोत :

मानव के जीवन से संबंधित हर प्रकार के अच्छे और बुरे कार्यों के पीछे किसी-न-किसी व्यक्ति की प्रेरणा रहती है। इसी प्रकार महाकवि रामदास निमेश जी के व्यक्तित्त्व निर्माण के पीछे भी कुछ प्रेरणा देनेवाले व्यक्तियों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसका विवेचन-विश्लेषण यहा प्रस्तुत है -

साहित्य के क्षेत्र में महाकवि रामदास निमेश जी के प्रेरणास्त्रोत के रूप में हिंदी साहित्य के छायावाद काल के आधारस्तंभ, कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार 'जयशंकर प्रसाद' जी रहे है।

सामाजिक क्षेत्र में महाकवि निमेश जी के प्रेरणास्त्रोत उनके पिता जी श्री करनपाल जी और भारतीय संविधान के शिल्पी, वोधिसत्व, दलितोद्धारक, भारतरत्न डॉ. वावासाहव अम्वेडकर रहे हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में निमेश जी के प्रेरणास्त्रोत उनके नानाजी श्री रामलाल, नानाजी के गुरू स्वामी परमानंद जी, करूणा सागर स्वामी करूणानंद और महाकवि के गुरू भगवान रजनीश 'ओशो' जी रहे हैं।

राजनीति के क्षेत्र में महाकवि निमेश जी के प्रेरणास्त्रोत राज्यपाल श्री.आर.डी. भण्डारे, आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री.दामोरदन संजीवैय्या जी, और सेवास्तम्भ के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री.आर संगीथा राव जी रहे हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी को उपर्युक्त महान व्यक्तियों की प्रेरणा मिलने के कारण ही वे जीवन में सफल हो गये हैं।

1.1.13 कार्य :

महाकवि रामदास निमेश जी ने सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्यक्रमों में सहभाग लिया है तथा उसमें इनकी भूमिका अहम रही है। इनके द्वारा किए कार्यों का विवेचन -विश्लेषण हम निम्नलिखित प्रकार से करते हैं -

1. सन् 1967 ई. में अपने अन्य साथियों के साथ 'नव निर्माण संघ' की स्थापना की है।
2. सन् 1968 ई. में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में 'अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति हितकारी संस्था' की स्थापना की है।
3. सन् 1967 ई. में स्व.श्री दामोदर संजीवैया की प्रेरणा से नई दिल्ली में शोषित, पीड़ित, दलित जाति के उत्थान हेतु 'फेडरेशन ऑफ एस.सी.एस.टी. वैक-वर्डस् एण्ड माइनोरिटी एम्पलोइज वैलफेयर एशोसिएशनस' की स्थापना की। इसके संस्थापकों में इनका स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। इस फेडरेशन के महासचिव के रूप में सन् 1967 से 1968 ई. तक महाकवि निमेश जी ने कार्य किया है।
4. सन् 1952-53 ई. को 90 हजार एकड़ जमीन से संबंधित मुकावला लढ़कर उसमें जीत प्राप्त की और वह जमीन वीरनगर गाँव के भूमिहीन तथा कमजोर वर्ग के लोगों को दिलाने का कार्य महाकवि निमेश जी ने किया है।

उपर्युक्त कार्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी सच्चे समाज सेवक है। उन्होंने किसी भी प्रकार की आशा, आकांक्षा, अपेक्षा न रखकर पूरी लगन के साथ समाज और राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन विताया हैं।

1.2 कृतित्व :

साहित्यकार अपने स्वानुभव को कल्पना में ढालकर उसे नया रूप प्रदान करता है। इसके साथ ही वह अपने साहित्य के द्‌वारा जीवन की विविध समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करता रहता है। रामदास निमेश जी बहुभाषी तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने गद्‌य, पद्‌य जैसी विधाओं पर लेखन कार्य किया है। अपने साहित्य में उन्होंने नारी और दलित स्वतंत्रता की उद्‌घोषणा की है। निमेश जी न्याय और समता के हिमायती है। उनकी कविताओं में वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। निमेश जी ने दलितों पर होनेवाले अन्याय अत्याचारों को वाणी देने के लिए अपनी लेखनी चलाई है। आप पर 'जयशंकर प्रसाद', 'स्वामी करूणानंद', डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी तथा आपके पिताजी श्री करनपाल जी आदि का प्रभाव है। इनसे प्रभावित होने के कारण ही आपने अपनी रचनाओं का सृजन किया है। अत: हम महाकवि निमेश जी की साहित्य संपदा का परिचय निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

1.2.1 प्रकाशित साहित्य :

महाकवि निमेश जी के द्‌वारा लिखित साहित्य कम मात्रा में प्रकाशित हुआ है। इसका विवेचन-विश्लेषण यहाँ पर प्रस्तुत है -

1.2.1.1 कविता :

1. **मन का कुहासा** (आगरा से निकलनेवाली 'युवक' पत्रिका में प्रकाशित)

1.2.1.2 महाकाव्य :

1. **भीमकथाअमृतम्** (गैलेक्सी पब्लिकेशन काउन्सिल, नई दिल्ली, द्वि.सं. अक्तू.1992)
   बीसवी सदी में कम मात्रा में महाकाव्य लिखे गए जिनमें से एक है।

1.2.1.3 कहानी :

1. वह - यह कहानी सन् 1960 ई. में आगरा से निकलनेवाली 'युवक' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई है।

1.2.1.4 लेख :

महाकवि निमेश जी ने अनेक लेखों का सृजन किया है। उनका प्रकाशन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हुआ है। इसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से है -

1.2.1.4.1 हिंदी लेख :

1. कोई अम्बेडकर, कोई लोहिया ही आज देश को गुलामी से बचा सकता है (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - जुलाई, 1993)
2. तृतीय शक्ति की आवश्यकता क्यों? (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - जुलाई, 1993)
3. ब्राह्मणवाद के संदर्भ में क्षत्रिय मानसिकता (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - अगस्त, 1993)
4. देश पुन: गुलामी की ओर (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - सितम्बर, 1993)
5. बाबासाहब डा. अम्बेडकर का राजनैतिक दर्शन और हम (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - दिसम्बर, 1993)
6. उच्चतर शिक्षा में आरक्षण विरोधी मनु व्यवस्था की वापसी (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - जून, 2006)
7. 'धम्म' मात्र धर्म नहीं वरन मानव जीवन पद्धति है (अपना अभियान (साप्ताहिक) कानपुर- दि. 8 सितम्बर, 2006)
8. लगता है डॉ. अम्बेडकर का स्वप्न बिखर गया (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - अप्रैल, 2007)
9. इस देश का षड़यंत्रकारी राजनैतिक चक्रव्यूह और मायावती का उच्चतम लक्ष्य (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - जून, 2007)

10. भारतीय राजनीति में राष्ट्र धर्म पर नेताओं की महत्त्वाकांक्षा भारी (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - अगस्त, 2008)

1.2.1.4.2 अंग्रेजी लेख :

1. Women Reservation in Parliament and state Assemblies ar well why? (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - अगस्त, 2005)
2. Are Centain Political Leadere not Responsible for bursting the communal Bombs in the country? (वॉयस् ऑफ द वीक् (पत्रिका) - सितम्बर, 2008)

1.2.2 अप्रकाशित साहित्य :

महाकवि निमेश जी द्‌वारा लिखित अप्रकाशित साहित्य का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है।

1.2.2.1 कविता:

महाकवि निमेश जी छात्रावस्था से ही कविता लिखते थे। इनके द्‌वारा लिखित कविता प्रकाशित नहीं हुई है। वे कविता निम्नलिखित प्रकार की है -

1. श्रद्‌धाजंलि (अप्रैल, 1961ई.)
2. गीत (नवम्बर, 1962ई.)
3. होली (9 मार्च, 1990 ई.),
4. चरखा
5. वरना
6. वालक अबोध सा (10 अप्रैल, 1985 ई.)
7. दिव्यरेखा (15 अप्रैल, 1985 ई.)
8. दर्द को मारने न देना (13 जनवरी, 1965 ई.)
9. भारतीय नारी की दुर्दशा और वावासाहव
10. हिंदू नारी और वावा

11. पावस ऋतु (28 जुलाई, 1990 ई.)

12. अर्धांगिनी (दिसम्वर, 1965 ई.)

13. अठखेली (मार्च, 1969 ई.)

14. यौवना की मदिरा पी है (27 अक्तूबर, 1964 ई.)

15. ये राम कहानी बाबू की

1.2.2.2 कहानी :

1. आराधना

1.2.2.3 अनुवाद :

1. धम्मपद - पालि से हिंदी में पद्यानुवाद करके भाषा टिका लिखी है।

निष्कर्ष :

महाकवि रामदास निमेश जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विवेचन-विश्लेषण के उपरांत प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि निमेश जी का जन्म 2 जुलाई, सन् 1934 ई. को उत्तर प्रदेश के एटा जिला के वीरनगर गाँव के कृषक परिवार में हुआ। महाकवि का जीवन प्रारंभ से संघर्ष पूर्ण रहा है। प्रतिकुल परिस्थितियों में निमेश जी ने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की है। आर्थिक स्थिति के कारण उनकी अगली शिक्षा पूरी नहीं हुई। नौकरी करते समय में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से 'प्रभाकर' की शिक्षा द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की है।

महाकवि निमेश जी धनाभाव के कारण नौकरी प्राप्त करने के लिए अपने मित्र के साथ दिल्ली भाग गए थे। वहाँ पर उन्होंने भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग में क्लर्क की नौकरी प्राप्त की। नौकरी से अवकाश प्राप्त होने के वाद वर्तमान समय में महाकवि निमेश जी 'वॉयस् ऑफ द वीक' इस पत्रिका के अतिरिक्त सम्पादक है। सन् 1960 ई. के बाद ही उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अनेक कविता, लेख तथा 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य का सृजन किया। उनके लेखन के विषय जनसामान्य से जुड़े है। उसमें उन्होंने दलित, नारी आदि

को केंद्र में रखा है।

महाकवि निमेश जी एक साहित्यकार होने के साथ वे एक अच्छे इन्सान भी है। उन्हें रामवती देवी जैसी शांत, व्यवहार कुशल पत्नी मिली। उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर एक अच्छे नागरिक बनाने का कार्य किया है। इसके कारण उनके बेटों ने आज नौकरियाँ प्राप्त की है।

महाकवि रामदास निमेश जी पर छायावाद काल के आधारस्तंभ महाकवि जयशंकर प्रसाद जी, उनके पिता करनपाल, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, उनके नानाजी श्री रामलाल, गुरू भगवान रजनीश 'ओशो' की कृपादृष्टि के कारण उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त हुई है। साथ ही उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्यों में सक्रिय सहभाग लिया है। उन्होंने समाज के शोषित, पीड़ित, दलित जाति के लोगों के उत्थान हेतु अनेक संस्थाओं की स्थापना की है।

महाकवि निमेश जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने गद्य और पद्य जैसी विधाओं पर लेखन कार्य किया है। अपने साहित्य में उन्होंने नारी और दलितों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचारों को वाणी दिलाने का कार्य किया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी एक प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के लेखक तथा एक सशक्त रचनाकार है।